डॉ. बी. भारती

कुलसचिव

डॉ. बी. भारती म.प्र. राज्य विश्वविद्यालय सेवा संवर्ग के वरिष्ठ अधिकारी है डॉ. बी. भारती बरकतउल्ला विश्वविद्यालय मे 16 दिसम्बर 2019 से कुलसचिव के रूप में कार्यरत है। इससे पूर्व आप म.प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा, डॉ. बी. भारती अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय महु (इन्दौर) रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर महात्मा गांधी (चित्रकूट) ग्रामोदय विश्वविद्यालय (चित्रकूट) सतना तथा अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय भोपाल में कुलसचिव के रूप मे सेवाएं प्रदान कर चुके हैं तथा पूर्व में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर में भी सहायक कुलसचिव / उप–कुलसचिव के रूप में कार्य कर चुके है ।

राज्य विश्वविघालय सेवा मे पदस्थी के पूर्व आप म.प्र. शासन, उच्च शिक्षा विभाग के अधीन प्रदेश के विभिन्न शासकीय महाविद्यालयों मे हिन्दी के प्राध्यापक के रूप मे महाविद्यालयीन शैक्षणिक सेवा मे रहकर अध्यापनरत थे।

डा. बी. भारती बैंकिंग सेवा शाखा प्रबंधक , म.प्र. विद्युत मण्डल तथा स्कूली शिक्षा विभाग मे भी कार्य कर चुके हैं।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. बी. भारती लगभग 30 वर्ष तक विश्वविद्यालय के प्रशासकीय–प्रबंधकीय क्षेत्र मे निरीक्षण, पर्यवेक्षण व निर्देशन का कार्य कुशलतापूर्वक निष्पादित कर रहे हैं। आपको साहित्य लेखन व सामाजिक सरोकार में रूचि है। डॉ. बी. भारती छात्र–छात्राओं व युवाओं के अभिप्रेरण की अदम्य उर्जा के केन्द्र हैं।

विजन

1 परम्परागत पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त वैज्ञानिक, तकनीकी, अभियांत्रिकी, चिकित्सकीय, कृषि व प्रशासनिक क्षेत्रों के पाठ्यक्रमों को समाज के विभिन्न विशेषकर कमजोर वर्गो के कल्याणर्थ अध्ययन, अध्यापन, अन्वेषण, शोध, प्रसार एवं प्रशिक्षण मे विस्तार प्रदान करना।

2 समाजोन्मुखी, गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा के सर्वोच्च मापदण्डों को स्थापित करना ही बरकतउल्ला विश्वविद्यालय के लिये परम् ध्येय है।

3 राष्ट् के समग्र उन्नययन हेतु विश्वविद्यालय मे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, शोध–प्रसार व प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से विश्वविद्यालय को अन्तर्राष्ट्रीय गौरव प्रदान कराना।

4 अध्यापन, शोध, शिक्षा–विस्तार, आदि के क्षेत्र में अभीष्ट प्रयोजन की प्राप्ति करने के लिये नव अकादमिक स्त्रोतों की खोज कर विश्वविद्यालय को ग्लोबल स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिमानों के अनुकूल बनाना।

5 आज के युगानुरूप प्रगतिशल, विकासशील परिवेश में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, शोधार्थियों व शिक्षकों के लिए सहज शैक्षणिक मार्ग प्रशस्त करना।

6 नवाचार, प्रतियोगी परीक्षाओं आदि मे हिन्दी भाषा को विश्वभाषा के रूप मे पुर्नस्थापित करना।